ISBN:978-81-974990-9-8

4. कोविड–19का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. धरणी राय

विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय)
संस्था – सेठ फूलचंद अग्रवाल स्मृति महाविद्यालय,
नवापारा–राजिम, रायपुर, छत्तीसगढ़

परिचय –

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोविड–19 को वैश्विक स्वास्थ्य आपदा के अनुसार सदी की सबसे बड़ा खतरा माना गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के द्वारा मार्च 2020 मे कोरोनावायरस रोग (कोविड–19) को मनोनीत किया गया है।

2020 कोरोनावायरस महामारी से भारत की आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा हद तक विघटनकारी रहा है। जब पूरे देश में कोविद–19 के कारण लॉकडाउन निर्मित हुई, तो उससे कई उद्योग एवं सरकारी व्यवसाय प्रभावित हुए। वैश्विकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय समाज दोनो को प्रभावित किया है।

पिछले 9 वर्षो मे विभिन्न प्रकार की गरीबी से 24.82 करोड़ लोग बाहर आये है। बहुआयामी गरीबी को आधा करने के लिए भारत ने 2030 से पहले अपने एसडीजी लक्ष्य को प्राप्त करने की संभावना थी। पर वर्ष 2020 मे कोरोना महामारी के चलते गरीबी और आर्थिक असंतुलन की स्थिति मे वृद्धि हुई। जिसके कारण सांख्यिकी मंत्रालय के द्वारा भारत की वित्त वर्ष 2020 वृद्धि दर घटकर 3.1 प्रतिशत रह गई। तथा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने यह अनुमान लगाया, कि भारतीय अर्थव्यवस्था –4.5 की दर से सिकुड़ रही थी।

भारत सरकार ने 30 जनवरी 2020 को केरल राज्य में कोरोनावायरस की पहले मामले की पुष्टि की थी। इसके बाद बेंगलुरु और महाराष्ट्र में कुछ मामले सामने आए, 22 मार्च 2020 तक कोविद–19 महामारी से 500 से अधिक लोग प्रभावित हो चुके थे। कोरोनावायरस (कोविड–19) के बढ़ते प्रकोप से बचने के लिए दुनिया भर के लगभग 162 देशों ने आंशिक और पूर्ण रूप से लॉकडाउन का उपयोग करके इसे नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे थे।

19 मार्च को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जनता से 22 मार्च की सुबह 7 से 9 बजे 'जनता कर्फ्यू' का पालन करने का अध्यादेश जारी किया था। जैसे–जैसे कोरोना वायरस बढ़ने लगा वैसे–वैसे हर देश ने अपने यहां लॉकडाउन शुरू किया, ताकि संक्रमण को बढ़ाने से रोका जाए, पर ऐसा संभव नहीं हो पा रहा था।

भारत में 25 मार्च 2020 में प्रथम चरण लॉकडाउन की प्रक्रिया को समर्थन मिला, जो 14 अप्रैल 2020 तक शिक्षा के क्षेत्र के साथ–साथ 21 दिनो के लिए लोगों का कार्यक्षेत्र तथा घर से बाहर आना तक नामुमकिन होने लगा, अर्थात लोगों के सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में भी कोरोना संक्रमण का असर देखने को मिल रहा था।

कोरोना वायरस का प्रभाव वैश्विक आर्थिक स्तर के पतन का कारण बन रहा था। भारतीय अर्थव्यवस्था को राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के कारण विकास और बेरोजगारी में बहुत अधिक गिरावट का सामना करना पड़ा। लॉकडाउन के जल्दी लागू करने से करोना वायरस से पीड़ित लोगों की संख्या में कमी आने लगी और चिकित्सा के बुनियादी और आवश्यक जरूरत को पूर्ण करने के लिए समय मिला। परंतु सख्त लॉकडाउन के कारण लोगो की आर्थिक स्थिति में गिरावट आई जिसे मद्देनजर रखते हुए सरकार ने आर्थिक बाधाओ से निपटने के लिए लॉकडाउन मे व्यक्तियों को बाहर निकालने की निर्णयक चरणबद्ध तरकीब से लागू करने में बेबस किया, जिससे सभी की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हो सके। जिसके फलस्वरुप जून 2020 तक भारत में कोरोना पॉजिटिव की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ने लगी। जिसके कारण दुनिया भर में भारत कोरोनावायरस से प्रभावित तीसरा देश बन गया। कोविड–19 भारत जैसे विकासशील देश में अत्यधिक और अस्थिर बाजार स्थितियों को जन्म दे रही थी। जिससे भारत की अर्थव्यवस्था चरमराने लगी थी।

"हम मेहनत करने वाले, दुनिया वालों से जब अपना हिस्सा मांगेंगे।
तब एक खेत नहीं, एक देश नहीं सारी दुनिया मांगेंगे।"

यह अध्याय कोविड़–19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पर आधारित है, जिसमें कोविद–19 का क्या है?, इसे जानना और समझने, तथा भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना के प्रभाव से डगमगाने की स्थिति को जानने, एवं समझना का प्रयास करेंगे।

बीज शब्द– कोविड–19, अर्थव्यवस्था, महामारी, प्रयास, लॉकडाउन, राहत, प्रभाव।

कोविड–19 –

वर्ष 2019 के अंत में पहली बार चीन के वुहान शहर से इस वायरस से संक्रमित लोगों का पता चला था। जिसने पूरी दुनिया को वैश्विक महामारी से हिला दिया। जो वायरस COVID–19 का कारण बना उसे सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम or SARS&CoV–2 नाम दिया गया। जो अनुवांशिक रूप से SARS&CoV–2, उस वायरस के समान है, जिसका प्रकोप वर्ष 2003 में SARS वायरस के समान था। इस वायरस ने दुनिया भर में वर्ष 2023 तक लगभग 7 मिलियन से भी अधिक लोगों की जान ली थी।

यह वाइरस तीव्र गति से एक इंसान से दूसरे इंसान में बुखार, सांस लेने मे तकलीफ जैसी लक्षणों से दिखाई देने लगा। जिसके कारण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 11 मार्च 2020 को संक्रमण फैलने से पूरी दुनिया में महामारी घोषित कर दिया गया। कोरोनावायरस रोग तेजी से फैलने के कारण पूरी दुनिया में सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधित अनेक चुनौतियां निर्मित हो रही थी। हमारी अर्थव्यवस्था में इस दौर ने देश भर में लाखों लोगों के रोजगार, जीवन–यापन के साधन तथा नौकरियों को खतरे में डाल दिया है। भारत में भी लॉकडाउन का असर आर्थिक क्षेत्र में अत्यधिक रूप पर पढ़ने लगा था, कल– कारखानो एवं मिलो में आंशिक यह पूर्ण रूप से कार्य बंद होने से मजदूर वर्ग बेरोजगार होने लगे, उनकी आर्थिक स्थिति इस महामारी में डगमगाने लगी। पूरे विश्व के देशो पर सबसे ज्यादा असर कोरोनावायरस महामारी से एविएशन, पर्यटन और होटल, रेस्टोरेंट पर पड़ा था। यह स्थिति सरकार के लिए एक चुनौती पूर्ण थी, और भारत सरकार इस विशाल महामारी की समस्या से निपटने के लिए तत्पर नहीं था। पूरी दुनिया पर कोरोनावायरस का असर पड़ा, विकसित देश चीन और अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था इस महामारी के सामने अशक्त होने लगी थी। विदेशी निवेश के जरिए भारत अपनी अर्थव्यवस्था मजबूत करने के प्रयास को भी धक्का पहुंचा, क्योंकि विदेशी कंपनियों के पास भी महामारी के दौरान पैसा नहीं होने से अनुदान में दिलचस्पी नहीं दिखाई गई।

जानकारों का यह कहना था, कि महामारी का असर अर्थव्यवस्था की इन स्थितियों पर इतना गहरा पड़ेगा जो, दो बातों पर आश्रित करेगा एक तो भारत में कोरोनावायरस की समस्या कितनी गंभीर होती है, और दूसरा कब तक इस महामारी के ऊपर नियंत्रण पाया जा सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था –

विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत की है, भारत क्षेत्रफल की दृष्टि में भी विश्व में सातवें स्थान पर है वर्तमान समय 2024 मे जनसंख्या की दृष्टि में भारत प्रथम स्थान पर है। बैंक के इंटरनेशनल कंपैरिजन प्रोग्राम (आईसीपी) के तहत वर्ष 2011 में चीन और अमेरिका के बाद भारत को स्थान दिया गया। 2011 की विश्लेषण रिपोर्ट में विश्व बैंक ने (परचेसिंग पावर पैरिटी) के अनुसार भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था घोषित किया था। वर्ष 2003–2004 में विश्व में भारत 12वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में थी।

फिर यह 2005 में दसवें स्थान पर रही। वर्ष 2013 दिसंबर के अनुसार देश की रैंकिंग के अनुसार वर्तमान मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर भारत की रैंकिंग 10 और प्रति व्यक्ति सकल आय के मुताबिक विश्व में भारत की स्थिति 161 वें स्थान पर है। विश्व बैंक के अनुसार भारत 2003 में प्रति व्यक्ति आय के लिए लिहाज से 143 वॉ स्थान पर था।

एंगस मैडिसन आर्थिक इतिहासकार ने अपने शब्दों में कहा था, भारत की अर्थव्यवस्था पहली शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। पहले सदी में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) भारत का दुनिया की कुल जीडीपी का 32.9 प्रतिशत था, तथा 1000 में यह 28.9 प्रतिशत रहा और 1700 में 24.4 प्रतिशत लेकिन दौरान आर्थिक प्रगति जनसंख्या वृद्धि से जुड़ी थी क्योंकि कोई भी नई तकनीकी या मशीन नहीं हुआ करती थी। भारत की अर्थव्यवस्था का ब्रिटिश काल में जमकर शोषण हुआ, 1947 में भारतीय अर्थव्यवस्था आजादी के समय अपनी सुनहरी इतिहास का एक खंडहर मात्र रह गई थी। 90 की दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था की रैंकिंग की स्थिति को मजबूत किया था। एक महाशक्ति के रूप मे उभरकर भारत विश्व के सामने आया। भारतीय अर्थव्यव्स्था को बढाने मे वैश्वीकरण जैसे कारको ने हमेशा अपनी भूमिका निभाई है।

महामारी के दौरान वर्ल्डबैंक के अंदाज के अनुसार वित्तीय वर्ष 2019–20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की लाभ दर कम होकर सिर्फ 5 प्रतिशत रह जाएगी, वही 2020–21 में समतुल्य स्तर पर अर्थव्यवस्था की लाभ मूल्यांकन में भारी गिरावट आएगी जो घटकर मात्र 2.8 प्रतिशत रह सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है, कि ऐसे समय पर यह महामारी आई, जब मौद्रिक क्षेत्र पर खिंचाव के चलते पहले से ही भारतीय इकोनॉमिक्स सस्ती की मार झेल रही थी। कोविड–19 के कारण इस पर दाब और बढ़ गया। पूरी दुनिया भर मे खरबों डालर जो बचत और राजस्व के रूप में जमा था, वह समाप्त होने लगा था, देश की जीडीपी में भी रोज कमी देखी जा रही थी। लगभग 90 देश अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से सहायता मांगकर रहे थे। आईएलओ के अनुसार पूरी दुनिया भर में ढाई करोड़ नौकरियां कोविड–19 की वजह से खतरे में आ गई। भारत में वर्ष 2021 को कोरोना महामारी वायरस की द्वितीय लहर से बहुत ज्यादा नुकसान हुआ, जिससे देश के घरेलू उत्पाद में गिरावट आई, जो इतिहास की सबसे बड़ी गिरावट थी। इस का सबसे अधिक प्रभाव गरीब परिवारों द्वारा अनुभव की गई आर्थिक क्षति को कम नही कर सकता है। भारत की जीडीपी में 24.4 प्रतिशत की भारी गिरावट अप्रैल से जून 2020 तक आई। अपडेट राष्ट्रीय आय धारणा के मुताबिक 2020–21 मौद्रिक या वित्तीय वर्ष की दूसरी त्रैमासिक (जुलाई से सितंबर 2020) में अर्थव्यवस्था में 7.4 प्रतिशत की और मंदी आई, (अक्टूबर 2020 से मार्च 2021) तीसरी और चौथी तिमाही में सुधार कमजोर ही रहा, जिसमें जीडीपी में क्रमशः 0.5ः और 1.6 प्रतिशत की बढतहुई, इसका मतलब है कि, भारत में पूरे 2020–21 वित्तीय वर्ष के लिए संकुचन या कसाव की समस्त दर प्रमाणिक रूप में 7.3प्रतिशत की थी। आजादी के बाद के काल में भारत की राष्ट्रीय आमदानी 2020 से पूर्व केवल चार बार घटी है, वर्ष 1958, 1966, 1973, और वर्ष 1980 में जिसमें से सबसे बड़ी गिरावट वर्ष 1980 मे (5.2 प्रतिशत) हुई थी। इसका मतलब है कि भारत के इतिहास में वर्ष 2020–21 आर्थिक कसाव के मामले में सबसे खराब साल रहा है, और दुनिया में समस्त संकुचन में भी बहुत ज्यादा खराब रहा है।

चित्र– कोविड–19 के दौरान भारत और विश्व मे आर्थिक संकुचन

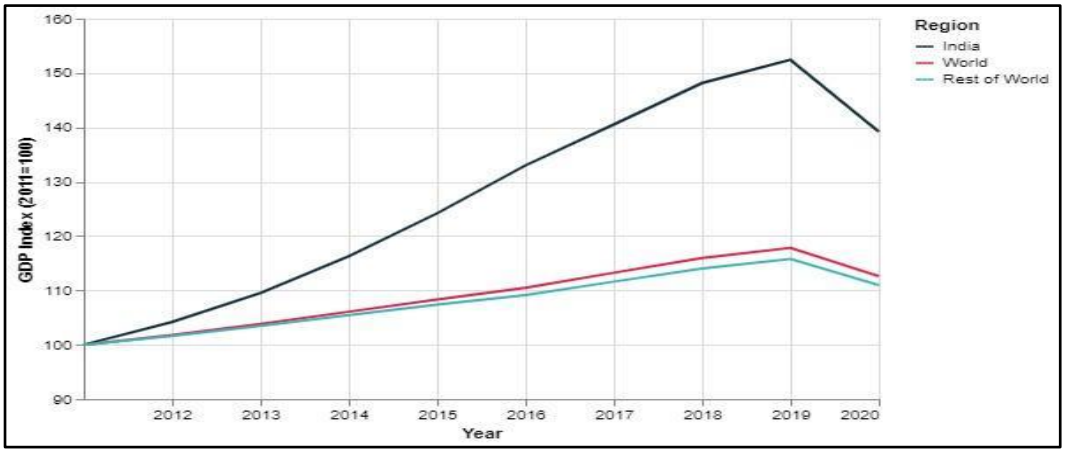

सोत्र– विश्व आर्थिक परिदृश्य अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष अप्रैल 2021।

लॉकडाउन का असर –

कोरोना वायरस के अत्यंत फैलाव से पूरे देश में लॉकडाउन की वजह से कई सरकारी व्यवसाय और उद्योग प्रभावित हुए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 24 मार्च को 21 दिन के लिए कठोर लॉकडाउन की घोषणा की गई, घरेलू संतुष्टि और आवश्यकता परिवर्तित होने के चलते आर्थिक वृद्धि दर संशोधित हुई। वहीं घरेलू निवेश में जोखिम बढ़ने से निवारण में भी समय लगने की प्रायिकता दिख रही थी। विश्व बैंक के अनुसार भारत ही नहीं इस महामारी की वजह से समूचा दक्षिण एशिया गरीबी निर्मूलन से मिले लाभ को गवा सकता है। विश्व बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री हैंड स्टीमर ने कहा कि, भारत का परिदृश्य अच्छा नहीं है, यदि भारत में ज्यादा समय तक लॉकडाउन जारी रहता है, तो यह आर्थिक स्तर विश्व बैंक के आकलन से अधिक खराब हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत को सबसे पहले इस चुनौती से निपटने के लिए कोरोना महामारी के विस्तृत होने की गति को रोकना होगा और साथ ही यह भी पुष्टि करना होगा कि प्रत्येक को खाना मिल सके।अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ ने कहा कि यह महामारी सिर्फ एक विश्वव्यापी स्वास्थ्य प्रणाली नहीं है, बल्कि एक बड़ा आर्थिक विपत्ति और श्रमिक मार्केट भी बन गया है, जो बड़े मानदंड पर लोगों को प्रभाव डालेगा। हमारी अर्थव्यवस्था का 50: जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है, और इस लॉकडाउन का सबसे ज्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ा। लॉकडाउन के दौरान छोटे उद्योग एवं काम–धंधे वाले काम नहीं कर पा रहे थे, वह कच्चा माल नहीं खरीद पा रहे, और ना ही बना हुआ माल बाजार में नहीं बेच पा रहे थे, जिससे उनकी कमाई का जरिया बंद हो गया और हमारी अर्थव्यवस्था पर असर पड़ा।

कोरोनावायरस भारत में पूरी दुनिया की अपेक्षा तेजी से फैल रहा था। वर्तमान में भारत में 40 लाख से अधिक मामले पाए गए थे और लगभग 90,000 से अधिक मौत हुई थी। इसलिए भारत में श्रमिको की कमी के कारण रोजगार को बड़ा नुकसान हुआ।

अर्थशास्त्रियों के अनुसार कोविड–19 मामले में तेजी से वृद्धि से सार्वजनिक वित्त को लेकर खींचतान के बीच मुद्रास्फीति बढ़ने का तात्पर्य है कि सुधार जल्दी नहीं किया जा सकता है। कुछ यह भी मानते है, की मार्च 2021 के माध्यम से अर्थव्यवस्था में लगभग 10ः का कसाव या संकुचन देखा जा सकता है। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने लॉकडाउन के शुरू के दिनों मे देश की घरेलू उद्योग को और अधिक आत्मनिर्भर बनाने के लिए पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनने के लक्ष्य को साकार करने के लिए प्रयास किया था।

लगभग 14 करोड लोगों ने लॉकडाउन के दौरान अपना रोजगार खो दिया, और अन्य लोगों के पारिश्रमिक में कटौती हुई। पिछले वर्ष की तुलना में देशभर में 45ः से अधिक परिवारों ने अपनी आय में न्यूनता दर्ज की गई। भारतीय अर्थव्यवस्था को 21 दिनों के पूर्ण लॉकडाउन के दौरान हर दिन 32000 करोड़ से अधिक की पारिश्रमिक का हानि पहुंच रही थी। हमारे देश में पूर्ण लॉकडाउन के चलते +2.8 ट्रिलियन आर्थिक गठन का एक चौथाई से भी कम गतिविधि कार्यात्मक था।

कर्मचारी दिहाड़ी मजदूर और किसान अनौपचारिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा संकट वाले लोग हैं। महामारी से पहले, सरकार ने महामारी से पहले कम विकास दर और कम मांग के बावजूद 2024 तक अर्थव्यवस्था को अनुमानित +2.8 ट्रिलियन से +5 ट्रिलियन तक परिवर्तन करने का अपना उद्देश्य रखा था।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड–19 का प्रभाव –

अर्थव्यवस्था को वापस पटरी पर लाने के लिए सरकार निवेश के जरिए नियमों में राहत और आर्थिक मदद की कोशिश कर रही थी, पर सरकार को अधिक सफलता नहीं मिली, क्योंकि कोविड–19 महामारी के बढते हालात ने अर्थव्यवस्था की कमर ही तोड़ डाली, ना तो कहीं उत्पादन है और ना मांग, लोग घरों में है और कल–कारखानों, होटलो तथा दुकानों पर ताले लगे हुए।

अब दोहरी लड़ाई कोरोना से है,ज्यादातर देश सेहत और अर्थव्यवस्था दोनों का विनाश करने में जुटे हैं, भारत में महामारी रोकने की कवायद जोर पकड़ रही है, लेकिन आर्थिक राहत में भारत पिछड़ गया है।

पर्यटन–

भारत ऐतिहासिक पर्यटन और सांस्कृतिक के मामले में बहुत ही विशाल है जो वर्ष भर विदेशी और घरेलू नागरिकों को मोहित करता है। यह विस्मय की बात नहीं है, कि भारत में कोविद–19 के बलिष्ठ मामलों में विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में सम्मिलित है। लेकिन प्रवेश परमिट या वीजा स्थगित होने और अनिश्चितकाल के लिए पर्यटक आकर्षण थम जाने के कारण होटलो, रेस्टोरेंट, आकर्षण, एजेंट और ऑपरेटरो को हजारों–करोड़ों रुपए का ह्रास होने की आशा है। विशेषज्ञ का मानना है कि यह आने वाले समयो में उद्योगों को अपाहिज बना सकता है।

दवाइयां–

दवा उद्योग पर महामारी का पड़ने वाला असर भारत के लिए चिंता का विषय है, क्योंकि चीन से 70ः सक्रिय दवा सामग्री (API) आयात की जाती है। देश में दवाई निर्माण कंपनियों के लिए यह सक्रिय दवा सामग्री आवश्यक है। क्योंकि भारत में तेजी से कोविद–19 फैल रहा है, इसलिए उपभोक्ताओं की सबसे बड़ी मांग दवाइयां की होती जा रही है,परन्तु दवाइयो को बनाने के लिए।PI काफी मात्रा में मौजूद नहीं है। इसलिए दवा व्यापारी और बाजार आसमान छूती कीमतों को देख रहे हैं। मार्केट में पेनिसिलिन और विटामिन की कीमतों में 50ः पहले से ही बढ़ी हुई देखी जा रही है।

कच्चा माल और स्पेयर पार्ट्स–

कोरोना वायरस महामारी के कारण भारत द्वारा आयात की जाने वाली इलेक्ट्रॉनिक का लगभग 55ः चीन से आता था, जो लॉकडाउन की वजह से पहले ही आयत में 40ः गिरावट आ चुकी है। भारत एकल बाजार पर अवलंबित कम करने के लिए स्वदेशी निर्माण को प्रोत्साहन देने पर संकल्पना कर रहा है। इसके अलावा, चीन खनिज ईंधन, जैविक रसायन,कपास आदि जैसे कच्चे माल के प्रस्थित के लिए भारत का सबसे बड़ा तीसरा निर्यात साझेदार हैय और भारत के लिए इन देशों के लॉकडाउन से अत्यधिक मात्रा में व्यापार नुकसान होने की संभाव्यता है।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विमान–

भारत सरकार द्वारा अनिश्चितकाल के लिए पर्यटक वीजा स्थगित करने के कारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एयरलाइंस दबाव में काम कर रही है। भारत से विदेश आने–जाने वाली लगभग 600 अंतरराष्ट्रीय उड़ाने तथा लगभग 90 घरेलू उड़ाने रद्द कर दी गई है।

जिस की वजह से एयरलाइंस किराए में भारी मंदी आई है, सरकार से पर्सनल हवाई अड्डा संचालकों ने आग्रह किया है कि बड़ी हुई हवाई जहाज शुल्क को कवर करने के लिए पर नाममात्र यात्री सुविधा शुल्क हवाई टिकट पर लगाने की मंजूरी प्रदान की जाए।

महामारी की स्थिति से निपटने के प्रयास–

कोरोना महामारी की स्थिति से निपटने के लिए भारत सरकार ने कई साधन की घोषणा की जिसमें स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और प्रत्येक राज्यों के लिए धन और कर चुकाने की समय सीमा बढ़ाई। आर्थिक प्रभाव से उबरने के उपायों पर बोलते हुए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ ने कहा कि, सरकार के नीति निर्माता को प्रचुर निर्दिष्ट राजकोषीय उद्देश्य लागू करने की जरूरत होगी। उन्होंने आर्थिक स्थिति को सुदृढ़, सामान्य और सुचारू बनाने के लिए व्यापक मौद्रिक प्रोत्साहन और नीतिगत दरों में कमी करने की सलाह दी। 26 मार्च को कुल 1,70,000 करोड़ से अधिक की आर्थिक राहत उपायों की घोषणा गरीबों के लिए की गई।

अगले दिन देश की वित्तीय प्रणाली को 3,74,000 करोड़ भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने उपायों की घोषणा से उपलब्ध कराई। साथ ही अर्थव्यवस्था को जीर्णोद्धार करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने मार्च के बाद से प्रमुख ब्याज दरों में (1.15 प्रतिशत अंक) की कमी की। कोविड–19 महामारी से निपटने के लिए विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने भारत को अपना पूर्ण समर्थन दिया। 12 मई 2020 को प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र के नाम एक आह्वान में आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की थी, जिसके तहत उन्होंने कहा वोकल फॉर लोकल से तात्पर्य– अपने देश की वस्तुओं का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना और अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना, जिसके लिए 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज की पुष्टि की गई, जो सकल घरेलू उत्पाद का 10 प्रतिशत है। बेरोजगारी दर्ज 6.7 प्रतिशत मार्च 15 को थी, जो बढ़ाकर 26 प्रतिशत हो गई, फिर पूर्व लॉकडाउन स्तर पर मध्य जून मे वापस आ गई। नरेंद्र मोदी जी द्वारा घोषित मई मे जीडीपी के 10 प्रतिशत के बराबर एक प्रोत्साहन पैकेज जिसमें गरीबों को मुफ्त अनाज और बैंक ऋण पर क्रेडिट गारंटी शामिल है।

कोविद–19 के प्रभाव को रोकने में कर राहत मदद साबित होगी –

कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए आर्थिक प्रभाव से निपटने के लिए सरकार ने कर पर छूट देने का विचार किया, पर जीएसटी राजस्व संग्रह में भारत में पहले से ही मंदी चल रही है, और कोरोनावायरस का डर परिस्थिति को और ज्यादा खराब कर सकता है।

1.33 बिलियन की आबादी में 200 से कम सक्रिय कोविड–19 मामलों के साथ, भारत सरकार नीति में कोई बड़ा बदलाव करने और कर राहत देने की जल्दी में नहीं है।

हालांकि सरकार ने 30 जून 2020 तक वित्त वर्ष 2018–19 के लिए जीएसटी प्रविष्ट करने की समय को बढ़ाने की घोषणा की है। अनिवार्य ई–इन्वॉइसिंग की शुरुआत को भी भारत में 1अक्टूबर 2020 तक के लिए दोबारा कर दिया गया है। ब्रिटेन की सरकार 400 अरब डॉलर मे टैक्स रियायत, कारोबारियो को सस्ता कर तथा अनुदान सहित कई राहत पैकेज साथ लाई है, जो उनके देश के जीडीपी के 15 फीसदी के बराबर है। बैंक ऑफ इंग्लैंड बाजार में ब्याज दरे घटकर पूंजी झोंक रहा है।

इटली की सरकार ने 28 अरब डॉलर का पैकेज कॉविड–19 से प्रभावित लोगों के लिए घोषित किया है जिसमें हवाई जहाज सेवा का राष्ट्रीयकरण सम्मिलित है। फ्रांस का करीब 50 अरब डॉलर कोरोना राहत पैकेज जो उनकी जीडीपी का 2 प्रतिशत का है। 66 अरब डॉलर ऑस्ट्रेलिया का और 12 अरब डॉलर न्यूजीलैंड का उनकी जीडीपी का 4 प्रतिशत का है। 60 अरब डॉलर सिंगापुर ने अपनी 56 लाख की आबादी के लिए राहत पैकेज लाया है। अन्य देशो ने महामारी के समय अपने जीडीपी का 4 से 11 प्रतिशत के बराबर पैकेज को दिया, जबकि भारत राजस्व में कमी के कारण अपनी जीडीपी की तुलना में केवल 0.8 फीसदी राहत पैकेज दिया।

भारत सरकार के द्वारा करीब 1.7 लाख करोड रुपए का पैकेज कोरोना महामारी से प्रभावित लोगो को सांकेतिक मदद पर केंद्रित था जिसमें मुख्य रूप से सस्ता अनाज, किसान सहायता निधि और अन्य स्कीमों मे नगद भुगतान की किस्त जल्दी जारी होगी इसके लिए बजट पारित हो चुका था। मुफ्त एलपीजी सिलेंडर के लिए उज्वला के तहत तेल कंपनियों को सब्सिडी भुगतान पर रोका लगा। भारत में संग्रह करीब 11 लाख करोड रुपए का भविष्य निधि पीएफ है, इससे एडवांस लेने की छूट और छोटी कंपनियों में ब्रोकर को नियोजितो के अंशदान को 3 महीने के टलने के लिए इस निधि का भरपूर प्रयोग होगा। रिजर्व बैंक ने सरकार के मुकाबले ज्यादा आगे आकर सभी बैंकों को सभी कर्ज की किश्तों में 3 महीने की राहत देने की घोषणा की, तथा सभी ब्याज दरों में कमी की है और करीब 3.74 लाख करोड़ की पूंजी वित्तीय तंत्र में बढाई है, ताकि कर्ज की कमी ना रहे। अन्य देश की तरह भारत सरकार कोरोना के मारे मजदूर, छोटे कारोबारी, नौकरियां गंवाने वालों को कोई नई और सीधी मदद नहीं दे सकी है, भविष्य निधि से मिले रही रियतों के लाभ केवल 15 से 16वीं फीसदी प्रतिष्ठानों के लोगो की पहुंच तक सीमित है।

परिणाम–

प्रत्येक देश मे की अर्थव्यवस्था की अदृश्य रीढ़ वह पर मौजूद समाज है। धार्मिक विविधता को कमजोरी के बजाए भारत मे शक्तिशाली ताकत के रूप मे देखना चाहिए जिससे सामाजिक सद्भाव का विकास हो, जो हमारे भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक है।

कोरोना महामारी से गुजरते समय में भारत की अर्थव्यवस्था अपनी क्षमता से कम परफॉर्म कर पा रही है। क्योंकि इसका सीधा कारण यह है कि मजदूर वर्ग के लोगों की कमाई में कमी, जिसके चलते उन्होंने अपने खर्चे में कटौती करना शुरू किया तथा कारोबारी एवं छोटे उद्योग धंधे वाले लोग कर्ज या लोन लेने से बच रहे हैं। क्योंकि आर्थिक स्थिति सही नहीं होने से उत्पादन में लगातार कटौती की जा रही है। बैंक भी ऐसी स्थिति में कोई भी लोन जारी करने को लेकर अनिश्चित है, क्योंकि पुराने लोन तेजी से एनपीए में तब्दील होती नजर आ रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को सुचारू बनाने के लिए तथा प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए, हर एक व्यक्ति को अपना पूर्ण सहयोग सरकार को प्रदान करने की आवश्यकता है जिससे हमारी अर्थव्यवस्था एवं जनता की आर्थिक स्थिति वापस अच्छी हो सके।

निष्कर्ष–

आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकार को दो तरफा नजरिए को अपनाना आवश्यक है। एक तो सबसे पहले वाणिज्य बैंक, केंद्रीय बैंक, वित्तीय संस्थान और अन्य एजेंसियों से पैदा हुई परिस्थिति के अनुसार बनाए गए नीतियों को परिवर्तित कर मुख्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करना। तथा दूसरा इस परिस्थिति से बाहर आने के लिए आम जनता और निजी उद्यमों को संगठित और प्रेरित कर सम्मलित करना होगा। हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह संकल्प रखा था, कि बुनियादी सेवाओं तक पहुंच मे आने वाली समस्याओ का समाधान कर भारत को एक विकसित राष्ट्र यानी विकसित भारत 2047 बनाने की ओर अग्रसर हो सके ऐसा प्रण किया है।

जिसके लिए महामारी की इस भयंकर समस्या सभी हितधारकों से कड़ा साथ और समर्थन की मांग करती है। सरकार को यह स्पष्ट रखना चाहिए कि, सिर्फ सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है बल्कि सभी के सहयोग और साथ से ही इस स्थिति से बाहर निकाला जा सकता है। ऐसी मजबूत जिम्मेदारी की भावनाओं को आम जनता, उद्योगपति, निजी उद्यम, श्रमिको तथा सभी गैर–सरकारी हितधारको में पैदा करना जिससे कि वे अपना संपूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए अपनी आर्थिक स्थिति और भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत और सुदृढ़ बनाने में अपना सहयोग संपूर्ण रूप से प्रदान कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. यादव यादरामय "कॉविड–19– नोवेल कोरोना वायरस, एक अदृश्य शत्रु पब्लिकेशन विद्या मंच, प्रथम संस्करण (2020)
2. सिंह. संजय, "कोरोनावायरस के कारण भारत में पैदा हुई आर्थिक चुनौतियां," ORFमूल से, (मई 10, 2020)www.orfonline.org

3. मिश्रा. उदित, "लॉकडाउन के राहत के बाद भी ग्रोथ क्यों नहीं कर पा रही भारतीय अर्थव्यवस्थाजाने जनसत्ता, (जुलाई 13, 2020).https://www.jansatta.com
4. राय. दीपू,"कोरोना के सामने घुटनों पर आई दुनिया की अर्थव्यवस्था" आज तक, नई दिल्ली, (जून 24, 2020). https://www.aajtak.in
5. PAT 23-9% GDP Contracts for First Time in Over Four Decades NDTV.com
6. कुमार, राकेश "आईएमएफ ने कहा, कोविद–19 का लगातार फैलाव भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए खतरा" हिंदुस्तान लाइवरू हिंदी, बिजनेस न्यूज,(जुलाई 25, 2020). https://www.livehindustan.Com/business/story
7. Bureau]Our- PM Modi calls for Janta curfew on March 22 from 7 am-& 9pm-@ businessline] New Delhi] (March 20]2020) https://www.thehindubusinessline.Com
8. अलवधी. डिंपल,"कोरोना का प्रभाव 2020 में 4.25 फीसदी जीडीपी का अनुमान–सरकार,"बिजनेस डेक्स, अमर उजाला, नई दिल्ली, (जुलाई 6,2020). https://www.amarujala.com
9. PAT -23-9% GDP Contracts for First Time in Over Four Decades NDTV.com
10. "कॉविड–19 भारत में लॉकडाउन से प्रवासी कामगारों पर भारी मार" संयुक्त राष्ट्र समाचार,(अप्रैल 2,2020).
11. Ward- Ale,(2020–03–24). ÞIndias coronavirus lock down and it's looming crisiseplained VoL(अंग्रेजी में). मूल, (मार्च 25, 2020).
12. पांडे. गौरव, "पूरा देश लॉकडाउन की ओर, 31 मार्च से पहले फिर हो सकता है जनता कर्फ्यू का आहान" अमर उजाला, (जुलाई 23, 2020)- https://amarujala-com
13. https://hi.wikipedia.org
14. https://www.mayoclinic.org
15. https://www.worldometers.info
16. https://www.economicsobservatory.com
17. https://www.avalara.com
18. https://www.undp.com
19. https://www.nabard.org